iJRASET
International Journal For Research in Applied Science and Engineering Technology

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Volume: 13 **Issue:** IV **Month of publication:** April 2025

DOI:

www.ijraset.com

Call: 08813907089 | E-mail ID: ijraset@gmail.com

International Journal for Research in Applied Science & Engineering Technology (IJRASET)
ISSN: 2321-9653; IC Value: 45.98; SJ Impact Factor: 7.538
Volume 13 Issue IV Apr 2025- Available at www.ijraset.com

उत्तर प्रदेश की माध्यमिक शिक्षा में सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर नई शिक्षा नीति- 2020 के प्रभाव का अध्ययन

हरीश कुमार सिंह[1], डॉ. मो. सदरे आलम (सुपरवाइजर)[2]
[1]*शिक्षा शास्त्र विभाग, मगध यूनिवर्सिटी बोधगया (बिहार)*
[2]*असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, गया कॉलेज, गया (बिहार)*

सार- ***आधुनिक युग में विद्यार्थियों में दक्षता एवं कौशल के विकास के साथ-साथ सद्भावना, मिलनसारिता, कार्यकुशलता, धार्मिकता की भावना, चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व विकास, नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन तथा संस्कृति का संरक्षण आदि को सेकेंडरी शिक्षा के आवश्यक उद्देश्यों में महत्वपूर्ण महत्व दिया जा रहा है। अर्थात् वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा का महत्व और भी बढ़ गया है। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करके करके सीखने और सामाजोपयोगी नागरिक बनने पर अधिकाधिक बल दिया जा रहा। वास्तव में सेकेंडरी शिक्षा के सभी स्तरों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। सेकेंडरी स्तर के विद्यालयों में 14 वर्ष से 18 आयु वर्ष तक के बालक एवं बालिकाओं को शिक्षा प्रदान करने की शिक्षा है जहाँ पर कक्षा 9 व 10 को सेकेंडरी तथा कक्षा 11 व 12 को उच्चतर सेकेंडरी शिक्षा कही जाती है। सेकेंडरी शिक्षा औपचारिक शिक्षा का दूसरा चरण है, प्राथमिक और सेकेंडरी शिक्षा के बीच का अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा है, न केवल पाठ्यक्रम में बल्कि संगठन में भी। मध्य विद्यालयी शिक्षा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए के. जी. सैयदन (1967) ने कहा है कि सेकेंडरी शिक्षा के उद्देश्यों और राष्ट्रीय जीवन में उसकी भूमिका पर प्रश्न चिन्ह नहीं लगाया जा सकता है। यह विश्वविद्यालय का उद्देश्य है विद्यार्थियों को सहिष्णुता, विवेक, विचार, विचारधारा, साहस और सत्य की खोज में सक्षम बनाना। यह मानव समाज को उच्चतर लक्ष्यों के लिए प्रेरित करता है ताकि नागरिक अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए राष्ट्र और समाज की भलाई के लिए काम कर सकें।***

मुख्य शब्द- नई शिक्षा नीति 2020, माध्यमिक शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षण, यू.पी. बोर्ड, सी.बी.एस.ई. बोर्ड, ग्रामीण और शहरी

प्रस्तावना- शिक्षा को समाज और राष्ट्र के विकास का साधन माना जाता है और इस दृष्टि से शिक्षा मनुष्य को उस समाज के लिए तैयार कर रही है, जिसका निर्माण अभी निरन्तरता में है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा की शिक्षा के लिए सामाजिक निर्माण की यह चुनौती पूर्णतः एक नवीन और नूतन विचार है क्योंकि शिक्षा का अभी तक का कार्य, समकालीन समाज को उसी रूप में जीवित रखना तथा उसके सामाजिक सम्बन्धों को संजोए रखना रहा था। लेकिन वर्तमान में उसका लक्ष्य विद्यार्थियों को विश्व के लिए तैयार करना है न कि केवल भारत के लिए शिक्षित करना। अतः नूतन शिक्षा नीति 2020 के ऊपर आज यह बड़ी जिम्मेदारी है कि किस प्रकार शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों के भविष्य का निर्माण किया जाये। साथ ही साथ उनको इस दायित्व के लिए भी चिन्तन करना है कि बदलती शिक्षा के नवाचारों, नवीन आंदोलनों, संस्था विहीनीकरण, भाषा विहीनीकरण जैसे नये विचारों से उत्पन्न हुए नवीन शैक्षिक आंदोलनों ने खुली शिक्षा , सतत् शिक्षा और आजीवन शिक्षा जैसी अवधारणाओं को विकसित किया जो कि वर्तमान समय की माँग मानी जा सकती है। वास्तव में आज शिक्षा को समाज की बुनियादी जरूरतों में से एक मानी जाती है। इसीलिए सभी लोकतान्त्रिक देशों में व्यक्ति के विकास एवं लोकतंत्र की प्रगति हेतु एक न्यूनतम स्तर की शिक्षा अनिवार्य कर दिया गया है। सामाजिक अध्ययन छात्रों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें शिक्षा और जीवन में सफलता के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करता है। यह संदर्भ-आधारित सामग्री प्रदान करके पढ़ने और सीखने में सुधार करता है जो छात्रों की पढ़ने की क्षमता और आलोचनात्मक सोच कौशल को बढ़ाता है। यह नागरिक जिम्मेदारियों और मूल्यों को भी सिखाता है, यह सुनिश्चित करता है कि छात्र इतिहास, राजनीति और संस्कृति के बारे में सीखकर एक लोकतांत्रिक समाज में नागरिक के रूप में अपनी भूमिका को समझें। इसके अलावा, सामाजिक अध्ययन सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है, जिससे छात्रों को विविध पृष्ठभूमि की सराहना करने और उनसे जुड़ने में मदद मिलती है, जो एक बहुसांस्कृतिक दुनिया में सार्थक बातचीत के लिए महत्वपूर्ण है। सामाजिक विषय का अध्ययन भविष्य के कैरियर पथों को कैसे प्रभावित कर सकता है? इसका संभावित उत्तर है कि सामाजिक विषय का अध्ययन शिक्षा, सार्वजनिक नीति, कानून, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, सामाजिक कार्य और पत्रकारिता जैसे विभिन्न कैरियर पथों के द्वार खोल सकता है। सामाजिक अध्ययन से प्राप्त कौशल और ज्ञान, जिसमें आलोचनात्मक सोच, शोध और संचार शामिल हैं, कई व्यवसायों में अत्यधिक मूल्यवान हैं। वास्तव में माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों में ऐसे अनेक कारक होते है जिससे संवेग प्रधानता वाले विद्यार्थियों की गुणवत्ता और उपलब्धता को प्रभावित किया जा सकता है। जिसमें प्रमुख रूप से विद्यार्थियों का सामाजिक व्यवहार, सामाजिक समरसता-सहिष्णुता , भाई चारा, समानता, न्याय, बंधुत्व, भ्रातृत्व, पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक और शैक्षिक समायोजन, आचार-विचार सम्बन्धी ज्ञान, वैश्विक संस्कृतियों का ज्ञान, भूगोल, इतिहास और सम-सामयिक नवाचार आदि के गुणवत्ता का विकास विद्यार्थियों द्वारा किया जा सकता है, लेकिन निस्संदेह सेकेंडरी शिक्षा स्तर पर सामाजिक विज्ञान का शिक्षण ही विद्यार्थियों में इन अपेक्षित गुणों के विकास में इसकी आवश्यकता सिद्ध करता है। इस प्रकार, उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उत्तर प्रदेश जैसे बड़ी जनसंख्या वाले राज्य में सेकेंडरी शिक्षा अपने लक्ष्यों को पूरा कर रही है और क्या

© IJRASET: All Rights are Reserved |

सामाजिक विज्ञान शिक्षण इस उद्देश्य को पूरा करने में अपनी अंतर्निहित जिम्मेदारियों को पूरा कर रहा है। इसके अतिरिक्त, उभरती हुई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सामाजिक विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों को कैसे प्रभावित करती है, आदि जैसे प्रश्नों के समाधान के लिए यह अनुसन्धान अध्ययन प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है।

शोध समस्या- अनुसन्धान कर्ता द्वारा वर्तमान अध्ययन के लिए चुनी गई अनुसन्धान समस्या की पहचान निम्न रूप में की गई है- ''उत्तर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा में सामाजिक विज्ञान शिक्षण पर नवीन शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव का अध्ययन''।

अनुसन्धान चरों की परिभाषा- वर्तमान अनुसन्धान समस्या में प्रयुक्त शब्दावलियों को निम्न रूपों में परिभाषित किया गया है-

माध्यमिक शिक्षा- देश के शैक्षिक ढांचे में माध्यमिक शिक्षा को प्राथमिक और उच्च शिक्षा को जोड़ने वाली एक मध्यवर्ती कड़ी के रूप में मान्यता प्राप्त है। माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में मुख्य रूप से 14 से 18 वर्ष की आयु के छात्र शामिल हैं, जिसमें कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा शामिल है। उत्तर प्रदेश में सेकेंडरी शिक्षा का संचालन प्रयागराज (इलाहाबाद) की सेकेंडरी शिक्षा परिषद द्वारा प्रबंधित किया जाता है। प्रस्तुत अनुसन्धान अध्ययन में सेकेंडरी शिक्षा से तात्पर्य सेकेंडरी विद्यालयों के कक्षा 9 और 10 में नामांकित छात्रों की शिक्षा से है।

सामाजिक विज्ञान का शिक्षण- सामाजिक विज्ञान का शिक्षण सेकेंडरी शिक्षा के जूनियर सेकेंडरी स्तर पर पढ़ाए जाने वाले अनिवार्य विषय को संदर्भित करता है। यह छात्रों को समाज के मूलभूत विषयों की विस्तृत समझ प्रदान करता है, जिससे वे समाज और राष्ट्र के हितों को पूरा करने में सक्षम होते हैं वर्तमान अनुसन्धान अध्ययन में, सामाजिक विज्ञान का शिक्षण सेकेंडरी स्तर पर अनिवार्य शिक्षण विषय को संदर्भित करता है जो कक्षा 9 और 10 में छात्रों को उनके अधिकारों और कर्तव्यों, सामाजिक चरित्र के विकास और सहयोग, प्रेम और एकजुटता को बढ़ावा देने के बारे में ज्ञान में योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, यह एक स्वास्थ्य शैक्षिक परिप्रेक्ष्य के विकास में सहायता करता है, देश की विरासत और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रेम और श्रद्धा को बढ़ावा देता है, सामाजिक प्रगति में सहयोग की सुविधा देता है, सामाजिक सामंजस्य में योगदान देता है, और सामाजिक जीवन को उन्नत, उचित और समृद्ध बनाने के लिए बढ़ाता है।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020- भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति में बदलने के लिए भारत सरकार ने 1986 की शिक्षा नीति के 34 साल बाद अंतरिक्ष वैज्ञानिक कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में 29 जुलाई, 2020 को शिक्षा नीति की घोषणा की। दूसरे शब्दों में, इस अनुसन्धान अध्ययन में, नवीन शिक्षा नीति 2020 से तात्पर्य भारत सरकार द्वारा 29 जुलाई, 2020 को घोषित शिक्षा नीति से है, जिसमें कक्षा 9 और 10 के पाठ्यक्रम में सामाजिक विज्ञान शिक्षण के मूल विषय से संबंधित प्रावधान शामिल हैं।

अनुसन्धान अध्ययन की उपकल्पनाएं- वर्तमान अनुसन्धान कार्य ने निम्नलिखित अनुसन्धान उपकल्पना की वैधता की पुष्टि की है-

उत्तर प्रदेश की सेकेंडरी शिक्षा में नवीन शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव में यूपी बोर्ड और सीबीएसई बोर्ड के छात्रों के लिए सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अनुसन्धान अध्ययन का दायरा- यह अनुसन्धान अध्ययन नवीन शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव की जांच तक सीमित रखा गया है यह उत्तर प्रदेश राज्य में सेकेंडरी स्तर पर सेकेंडरी शिक्षा की संरचना के भीतर यूपी बोर्ड और सीबीएसई बोर्ड के सरकारी सहायता प्राप्त और गैर-सहायता प्राप्त दोनों स्कूलों में कक्षा 9 और 10 के छात्रों के लिए सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर तक सीमित रखा गया है ।

संबंधित साहित्य सर्वेक्षण- मानवता का सारा ज्ञान पुस्तकों और पत्रिकाओं में संग्रहीत है। मनुष्यों की प्रत्येक पीढ़ी ने उस संग्रहीत ज्ञान को प्राप्त करने, उसे परिष्कृत करने या उसे पूरी तरह या आंशिक रूप से बदलने का निरंतर प्रयास किया है। किसी भी अनुसन्धान कार्य की सफलता के लिए उस संचित ज्ञान का उपयोग करना आवश्यक है। अपनी समस्या से संबंधित अधिक से अधिक प्रासंगिक पुस्तकों, ग्रंथों, पत्रिकाओं और पिछले वर्षों में किए गए अनुसन्धान का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। शोध ग्रन्थ में शोध समीक्षा को किस प्रकार लिखा जाय? यह एक विशिष्ट प्रश्न है- साहित्य समीक्षा लिखना एक महत्वपूर्ण विशिष्ट कार्य है जिसके लिए स्रोतों और निष्कर्षों में एक भरोसे और विश्वास की आवश्यकता होती है। शोध छात्र को अपने क्षेत्र में सहज होना चाहिए और संबंधित भाषा में कुशल होना चाहिए क्योंकि गलतियाँ दस्तावेज़ की गुणवत्ता को नुकसान पहुँचा सकती हैं। डब्ल्यू.आर. बोर्ग (1963) ने कहा कि किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस नींव के समान है जिस पर भविष्य का सारा काम आधारित होता है। वर्मा, एस0 आर0 कुमार (2022) ने ''द कोरिलेशन स्टडी ऑफ सोशल साइंस टीचिंग एंड एचीवमेंट इन डिफरेंट कोर्सेज ऑफ द स्टूडेंट्स'' नामक विषय पर अनुसन्धान किया। इस अनुसन्धान अध्ययन के प्रमुख उद्देश्यों में सोशल साइंस टीचिंग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धियों का अध्ययन करना था। उन्होंने अनुसन्धान से यह निष्कर्ष निकाला कि दिल्ली के कक्षा 10 की परीक्षा में सोशल साइंस टीचिंग के विद्यार्थियों के शैक्षणिक उपलब्धियों का सकारात्मक संबंध

था। वर्मा, बी0पी0 (2020) ने ''स्टडी हैबिट्स, सोशल बिहेवियर, लैकॉप्स ऑफ कंट्रोल एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ सोशल साइंस टीचिंग'' नामक विषय पर अनुसन्धान किया और इसका निष्कर्ष यह निकाला कि कक्षा 10 के सामाजिक विज्ञान शिक्षण करने वाले विद्यार्थियों की उपलब्धि को लैकक्स ऑफ कन्ट्रोल सामाजिक व्यवहार और अध्ययन आदतें प्रभावित करती हैं। जिडेना, रुज़ेलोवा (1921) ने स्लोवाक किशोरों में ''सामाजिक समझ और सरकारी प्रोग्रामिंग आयामों का प्रभाव'' विषय के तहत अनुसन्धान किया। प्राथमिक उद्देश्य इस प्रकार हैं: 15 वर्षीय किशोर लड़कियों की सामाजिक समझ के मुद्दों पर सरकारी प्रोग्रामिंग के प्रभाव का अध्ययन करना और उनकी सामाजिक सूझ बूझ की परेशानी का तुलनात्मक अध्ययन करना। निष्कर्ष इस प्रकार थे: असामाजिक व्यवहार, माता-पिता के साथ व्यवहार और समूह व्यवहार पर सरकारी प्रोग्रामिंग का प्रभाव लड़कों और लड़कियों में समान पाया गया। सामाजिक समझ और सरकारी नीतियाँ, भावनात्मक मुद्दे और चिंताएँ लड़कों और लड़कियों दोनों को एक समान रूप से प्रभावित करती हैं, जबकि लड़कियों में लड़कों की तुलना में अवसादग्रस्तता के प्रभाव अधिक स्पष्ट पाए गए।

अनुसन्धान पद्धति – उत्तर प्रदेश में सेकेंडरी शिक्षा में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर नई शिक्षा नीति 2020 के प्रभाव पर एक अध्ययन विषय से प्रस्तावित अनुसन्धान अध्ययन के लिए अनुसन्धान कर्ता ने विषय की प्रकृति के आधार पर आंकड़ों के संकलन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का चयन किया है। इस प्रकार अनुसन्धान कर्ता ने उत्तर प्रदेश राज्य में सेकेंडरी स्तर पर पठन पाठन में संलग्न युवा विद्यार्थियों के विभिन्न पहलुओं पर आधारित आंकड़े प्रस्तुत करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

प्रतिदर्श- यादृच्छिक प्रतिचयन तकनीक- वर्तमान अनुसन्धान के लिए चयनित प्रतिदर्श

राज्य - सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश

जिला - गाजियाबाद, सहारनपुर, लखीमपुर, सोनभद्र और लखनऊ

क्षेत्र - ग्रामीण और शहरी

विद्यालय - उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा परिषद और केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड

लिंग - लड़के और लड़कियां

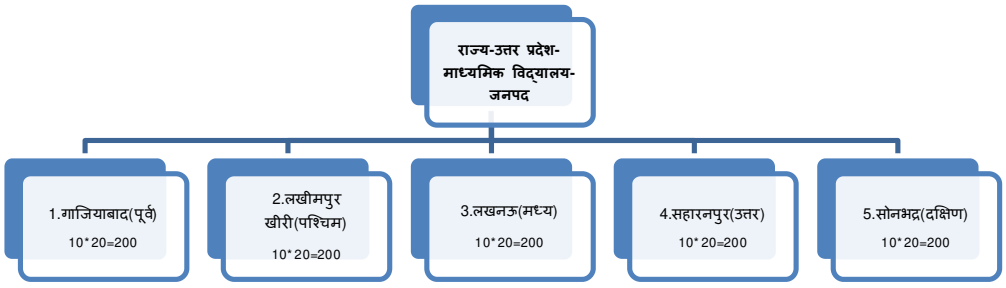

शोध परिणाम- प्रस्तुत किये गए अनुसन्धान अध्ययन में उत्तर प्रदेश में सेकेंडरी शिक्षा में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण के संबंध में उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा परिषद एवं केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों से एकत्रित आंकड़ों को सारणीबद्ध कर सांख्यिकीय रूप से प्रस्तुत किया गया है, जिसे निम्न तालिका में दर्शाया जा सकता है -

तालिका संख्या: उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा परिषद एवं केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा परिषद के विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान के शिक्षण का अध्ययन

क्र0सं0	अनुसन्धान चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	माध्य अन्तर	क्रान्तिक अनुपात
1	उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के छात्र	250	78.20	9.77	0.773	4.6	5.950
2	केन्द्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के छात्र	250	82.80	7.35			

स्वतंत्रता की डिग्री = 498 (0.01 और 0.05 पर महत्व स्तर क्रमशः 2.58 और 1.96 है। और सार्थक अंतर है)

अनुसन्धान निष्कर्ष- उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड और उत्तर प्रदेश में केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के छात्रों के बीच सामाजिक विज्ञान शिक्षण की स्थिति का अध्ययन करना था। इस संबंध में प्राप्त परिणामों में उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों तथा केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की स्थिति में सार्थक अंतर पाया गया, अर्थात केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों में सामाजिक विज्ञान शिक्षण की स्थिति उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की तुलना में श्रेष्ठ पाई गई। इसका एक संभावित कारण यह हो सकता है कि पारिवारिक एवं आर्थिक परिवेश, सामाजिक स्थिति, राजनीतिक स्तर, विद्यार्थियों के लिए पारिवारिक सहयोग तथा विकास के अवसरों की उपलब्धता जैसे कारक केंद्रीय सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों में उत्तर प्रदेश सेकेंडरी शिक्षा बोर्ड के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च स्तर पर हैं।

भावी अनुसन्धान हेतु सुझाव- अनुसन्धान कर्ता ने भावी अनुसन्धान कार्य तथा आगामी अनुसन्धान कर्ताओं के लिए इस विषय से संबंधित अन्य अछूते अनुसन्धान विषयों के संबंध में सुझाव प्रस्तुत किए हैं –

1. यह अनुसन्धान सोनभद्र, लखीमपुर खीरी, लखनऊ, सहारनपुर एवं गाजियाबाद के अतिरिक्त अन्य जिलों में भी किया जा सकता है।
2. यह शोध उत्तर प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा के अतिरिक्त अन्य तकनीकी पाठ्यक्रम जैसे आई.टी.आई और प्राविधिक शिक्षा पर भी किया जा सकता है।
3. यह अनुसन्धान भारत वर्ष के अन्य राज्यों में भी किया जा सकता है।यह शोध सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अतिरिक्त अन्य विषयों पर किया जा सकता है।
4. यह शोध सामाजिक विज्ञान शिक्षण के अतिरिक्त अन्य विषयों पर किया जा सकता है।
5. सभी शैक्षिक स्तरों पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शिक्षण रुचि, आदतें, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, अनुकूलन तथा शैक्षिक उपलब्धि पर इसके प्रभाव पर अध्ययन किया जा सकता है।
6. विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, आकांक्षा स्तरों, सामाजिक विज्ञान शिक्षा तथा सीखने के व्यवहार का सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।
7. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में किशोर विद्यार्थियों में अध्ययन आदतों, वांछित व्यवसायों तथा सामाजिक विज्ञान शिक्षा पर पर्यावरण जागरूकता तथा सामाजिक-आर्थिक स्थिति के प्रभाव का विश्लेषण किया जा सकता है।
8. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में विज्ञान और कला के छात्रों के शैक्षणिक अनुकूलन, उपलब्धि स्तर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा और सीखने के व्यवहार पर अध्ययन की आदतों के प्रभाव की जाँच की जा सकती है।
9. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पुरुष और महिला छात्रों के व्यक्तित्व, आकांक्षा स्तर, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, अनुकूलन और अध्ययन की आदतों के बीच संबंध की जाँच की जा सकती है।
10. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में सामान्य और दिव्यांग छात्रों की सामाजिक विज्ञान शिक्षा, जीवन की गुणवत्ता और व्यावसायिक आकांक्षाओं पर पारिवारिक वातावरण के प्रभावों का अध्ययन किया जा सकता है।
11. प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों की अन्य विषयों को पढ़ने की आदतों, सीखने के व्यवहार और शैक्षणिक परिणामों के बीच संबंध का विश्लेषण किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

[1] शिखर हिमांशु (2023): शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश में एम.एड. डिग्री के लिए लघु अनुसन्धान पत्र।
[2] लिंगम राम स्वामी (2023): शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश में एम.एड. डिग्री के लिए लघु अनुसन्धान पत्र।
[3] नूरी इंद्रावती (2023): चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, पंजाब में पीएच.डी. डिग्री (शिक्षा विभाग) के लिए अनुसन्धान अध्ययन।
[4] राजीव त्रिवेदी (2023): पीएचडी डिग्री (शिक्षा विभाग) पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर शिक्षा संकाय, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश में डिग्री।
[5] कुमारी इंदुमती(2023): पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन, शिक्षा संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ
[6] कुमार सुशील (2022): एम.एड. डिग्री के लिए लघु अनुसन्धान पत्र, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, यू.पी.
[7] तिवारी अंबिकेश (2022): एम.एड. डिग्री के लिए लघु अनुसन्धान पत्र, शिक्षा संकाय, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़।
[8] रस्तोगी अभिषेक (2022): पीएचडी डिग्री (शिक्षा विभाग), चंडीगढ़ विश्वविद्यालय, पंजाब।
[9] सिन्हा गोपालकृष्ण (2022): पीएचडी डिग्री, शिक्षा संकाय, ज्योतिबा फुले विश्वविद्यालय, बुंदेलखंड।
[10] मिश्रा प्रतीक (2022): पीएचडी डिग्री, शिक्षा संकाय, छत्रपति शिवाजी विश्वविद्यालय, कानपुर।
[11] चंद्र पुष्पकर (2022): शिक्षा संकाय, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, मध्य प्रदेश में पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन।
[12] शर्मा कृपा नाथ (2022): शिक्षा संकाय, आंध्र विश्वविद्यालय, विशाखापत्तनम में पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन।
[13] तनेजा राजेश्वर (2022): शिक्षा विभाग, एस.एन.डी.टी. महिला विश्वविद्यालय, पुणे, महाराष्ट्र में पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन।
[14] दुगुरपुरसुशील कुमार (2022): लघु अनुसन्धान पत्र, शिक्षा विभाग, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई।
[15] कर्मा महिपेंद्र (2022): शिक्षा संकाय, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम, केरल में पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन।
[16] नियोगी एस. (2022): शिक्षा विभाग, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या में पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन।
[17] पांडे एस. केन्द्रीय (2022): पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन, शिक्षा विभाग, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल।

[18] सिंह एस. केन्द्रीय (2022): पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन, शिक्षा संकाय, विश्व विद्यापीठ, राजस्थान।

[19] भारद्वाज आर. एल. (2021): एम.एड. डिग्री के लिए लघु अनुसन्धान पत्र, शिक्षा संकाय, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

[20] शर्मा आराधना (2021): पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन, शिक्षा संकाय, पंडित दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

[21] वैरागी एस. के0 (2021): पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन, शिक्षा संकाय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

[22] शर्मा वाई. (2021): पीएचडी डिग्री के लिए अनुसन्धान अध्ययन, शिक्षा विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर।

[23] सागर एस. (2021): एम. ए. डिग्री के लिए लघु अनुसन्धान पत्र, शिक्षा संकाय, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

© IJRASET: All Rights are Reserved |

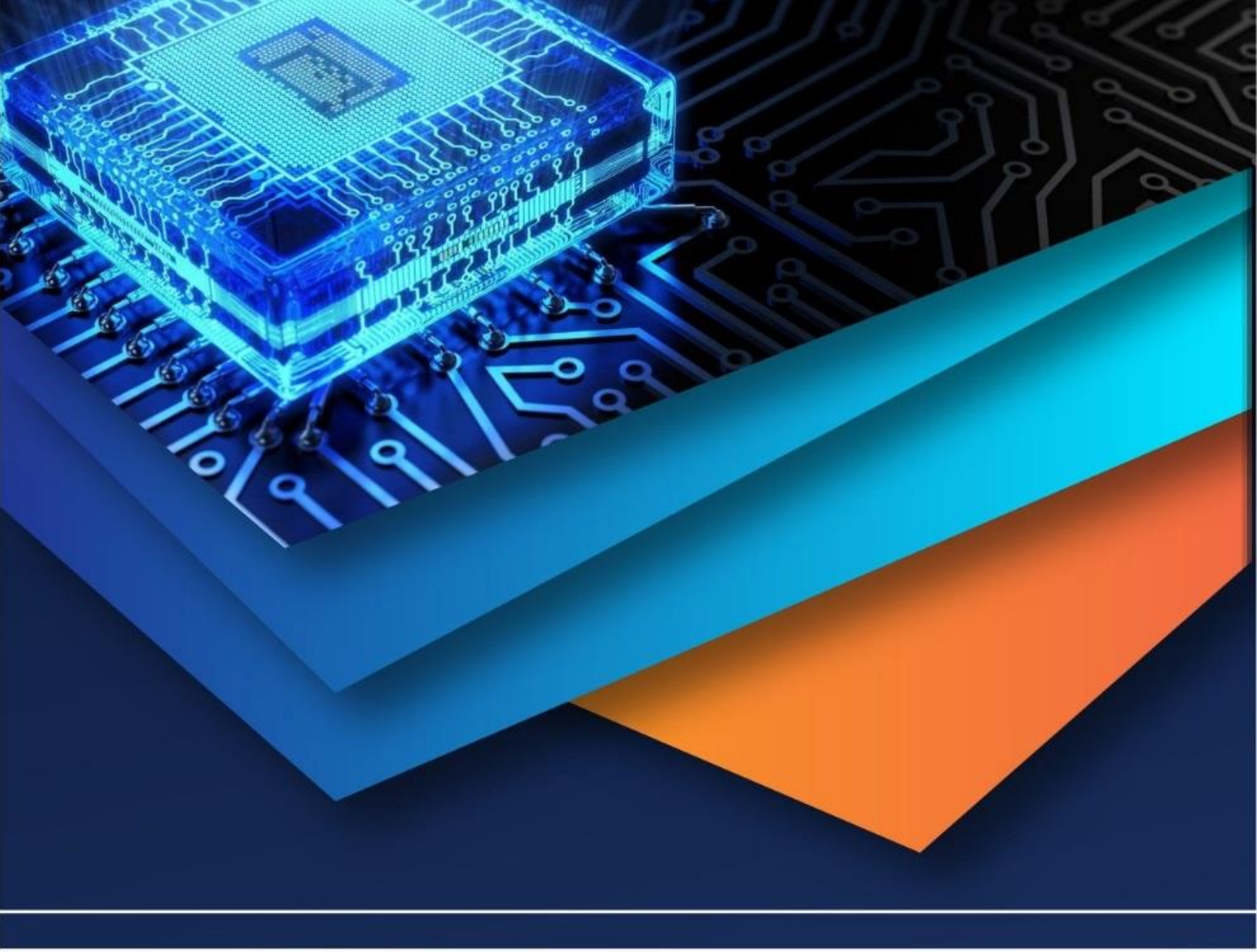

10.22214/IJRASET

45.98

IMPACT FACTOR: 7.129

IMPACT FACTOR: 7.429

INTERNATIONAL JOURNAL FOR RESEARCH

IN APPLIED SCIENCE & ENGINEERING TECHNOLOGY

Call : 08813907089 (24*7 Support on Whatsapp)